लोकगीत विशेषांक

(प्रथम संस्करण)

सत्र - 2022 - 2023

शिवाजी महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

एलुमनाई सैल के लिए पूर्व छात्रों द्वारा निर्मित ई – पत्रिका.....

पत्रिका

निर्देशक

डॉ० सर्वेश कु. दुबे

सम्पादक

आशुतोष सिंह

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों एवं साथियों!

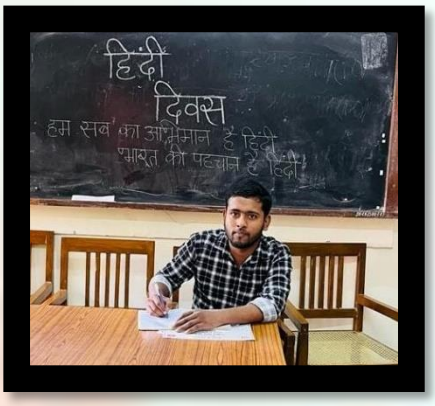

लोकगीत विशेषांक का पहला अंक ललित लावण्यमयी पंखुड़ियों को समेटे आप सब के कर कमलों में मुस्कुराएँ ऐसी आशा के साथ हमनें इस पत्रिका को अस्तित्व में लाने का प्रथम प्रयास किया है | यह पत्रिका पूर्णरूप से लोकगीतों के संकलन पर आधारित एक विशेष अंक है | यह हमारे सृजनात्मक पक्ष को तो जागृत करती है लेकिन उससे भी अधिक ये हमारे शोधात्मक ऊर्जा को जगाती है और हमनें उर्जस्वित होकर इस पत्रिका को आकार देने का प्रयास किया है |

उचित मार्गदर्शन में लगन, उत्साह एवं पूर्ण मनोयोग से किया गया कार्य अवश्य ही फलदायी होता है | विघ्नों, रूकावटों एवं बाधाओं से निडर होकर गतिशील रहना ही हम छात्रों का परम पुनीत कर्तव्य है | यही विचारधारा के साथ मैनें और मेरे साथियों ने पत्रिका निर्माण की प्रक्रिया का शुभारंभ किया | लोकगीत विशेषांक के मूल में लोक में प्रचलित गीत तथा उनका संकलन मुख्य है | अगर हम बात करे कि लोकगीत क्या है? तो हमें इसका उत्तर यह प्राप्त होगा कि सामान्यतः

लोक (जन सामान्य, अंचल) में प्रचलित या अंचल विशेष में गया जाने वाला गीत | इन गीतों को कोई एक व्यक्ति विशेष नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है | लोकगीत हमारी अंचल विशेष की संस्कृति के संवाहक होते है | वे क्षेत्र विशेष की सुन्दरता को अपने ग्रामिण शब्दों में समाहित कर माला रूपी गीत बनाने में सक्षम होते है | लोकगीतों के माध्यम से मनुष्य प्रेम, विरह, शान्त, मधुर, उमंग, हर्ष, श्रृगार आदि रस की रसानुभूति करते है | विभिन्न प्रदेशों के लोकगीत विभिन्न विशेषताओं को अपने अन्दर धारण किए हुए रहते है | लोकगीत रचनाकार जब लोकगीत सृजन करता है तो वह अपने व्यक्तित्व को लोक/ समाज समर्पित कर देता है | यही कारण है कि अधिकतर लोकगीतों के मूल रचनाकारों का पता नहीं चल पता है |

हमनें इस विशेषांक में उत्तर भारत में गाए जाने वाले परम्परागत लोकगीतों का समावेश किया है | ये लोकगीत हमारे देश भारत के पश्चिमी, उत्तरी, पहाड़ी तथा पूर्वी क्षेत्रों (अंचल) की विशेषताओं, वहाँ के अंचल विशेष की खूबसूरती, पूजा/कर्मकांड आदि का वर्णन

करने में सक्षम है | इन लोकगीतों को आज भी इन क्षेत्रों में बड़े आनन्द के साथ पारम्परिक तथा गैर पारम्परिक वाद्ययंत्रों के साथ गाया जा रहा है | इन लोकगीतों में भजन, संवाद, विरह- वेदना, विवाह, प्रेम, अंचल की सुन्दरता आदि विषय की प्रधानता है | हमारी पत्रिका में इन्ही विषयों पर आधारित लोकगीतों का समायोजन किया गया है|

इस पत्रिका की सफलता इस बात पर नहीं टिकी है कि भविष्य में इसे कितनी बार पढ़ा जाएगा या फिर ये (पत्रिका) कि लोगों के बीच में चर्चा का विषय बनता है या नहीं, किन्तु इस बात पर जरूर निर्भर करती है कि हमारे द्वारा अपने संस्कृति को सजोनों का छोटा सा प्रयास किया गया है |

इस प्रयास के पिछे हमे हमारे पूज्यनीय गुरू जी (डॉ० सर्वेश कुमार दुबे सर) का आशीष प्राप्त है | इस पत्रिका के निर्माण में मैं उन साथियों का मानसा आभार प्रकट करता हूँ जिन्होनें अपने क्षेत्र विशेष के लोकगीत इस पत्रिका में संकलित करवाएँ | ज्ञानवन् साथियों की सहायता के बिना इस पत्रिका का पूर्णरूप में अवतरण असंभव था | अत: प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में दिए गए सहयोग के लिए सभी का अपने अतः करण की गहराइयों से आभार प्रकट करता हूँ | लोकगीत विशेषांक में किसी भी त्रुटि के लिए कर बद्ध क्षमा याचना करता हूँ |

अन्त में वैदिक ऋचा के साथ

“संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् |
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते||”

आप सबका स्नेहिल
आशुतोष सिंह
सम्पादक

समर्पण

आदरणीय,

सम्मानित डॉ . सर्वेश कुमार दुबे सर वर्तमान में आप शिवाजी महाविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं | आपसे हमें सदा कुछ नया, कुछ अलग करने का प्रोत्साहन मिला है गुरु जी आपके श्री चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित...|

- आशुतोष सिंह
एवं समस्त संपादक मण्डल की ओर से....

सम्पादकीय मण्डल

निर्देशक
- डॉ. सर्वेश कु. दुबे

आशुतोष सिंह
सम्पादक

शुभम सिंह
सम्पादक

सह - सम्पादक मंडल

अतुल कुमार

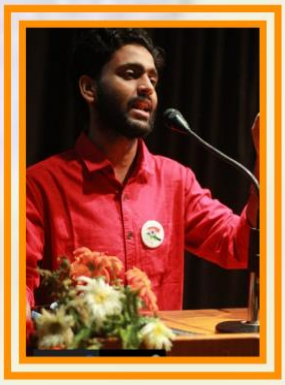

परवेज़ मुशर्रफ

आलोक रंजन

सत्यम पाण्डेय

भूमिका

पूरे विश्व में भारत अपने विभिन्नता में एकता व संस्कृति के लिए प्रख्यात है | भारतीय संस्कृति को अनेक दार्शनिकों ने अत्यंत ही वैज्ञानिकता से परिपूर्ण बताया है |

वर्तमान में वैज्ञानिक व तकनीकि से परिपूर्ण युवा वर्ग को अपने अद्वितीय ऐतिहासिक विरासत से परिचित कराना इस पत्रिका प्राथमिक उद्देश्य है |

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के सपनों का भारत जिसमें वो कहा करते थे :-

" एक हाथ में कमल एक में धर्मदीप्ति विज्ञान
लेकर उठने वाला है धरती पर हिन्दूस्तान ||"

को चरितार्थ करते हुए हमारी टीम ने यह प्रयत्न किया है कि विभिन्न स्थानों व विभिन्न बोलियों के लोकगीतों का संकलन किया जाए |

सम्पादकमण्डल ने अपने परिश्रम से अनेक महाविद्यालयों में अलग-अलग स्थानों से आए छात्रों के द्वारा संकलित लोकगीतों को "लोकगीत विशेषांक" पत्रिका में उचित स्थान देने का भरसक प्रयास किया है।

भारतीय सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक विषयों पर प्रकाशित होने वाली आशुतोष सिंह जी (शिवाजी महाविद्यालय) के नेतृत्व में यह पत्रिका नए छात्रों व बुद्धि जीवियों को सदा से स्थान देने का पूरा प्रयास करती है | इच्छुक पाठक हमें स्वरचित अथवा संकलन प्रेषित कर पत्रिका में स्थान पा सकते हैं |

सम्पादक मंडल ने समस्त उत्तर भारत जिसमें पहाड़ी, भोजपुरी, मगही, मैथिली समेत अनेक बोलियों के लोकगीतों के विवेकपूर्ण चिंतन मनन में अप्रत्याशित जीत हासिल की है |

पत्रिका के लोकगीतों के माध्यम से पाठक सहज ही भारतीय पुरातन संस्कृति के विचार - व्यवहार पूजा-पाठ धार्मिक आस्था आदि अनेक सामाजिक ऐतिहासिक तरीकों से सहज ही परिचय पा सकेंगे |

अनुपम साहित्यिक संकलन में सम्पादक मण्डल द्वारा सार्थक प्रयत्न किया गया है कि कोई त्रुटि न हो फिर भी विभिन्न प्रकार के बोलियों पे समान अधिकार न होना, टंकण दोष या कोई मात्रात्मक त्रुटि होने में कृतज्ञता का परिचय दें | यही पाठक वर्ग से अपेक्षा की जाती है |

- अतुल कुमार
दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुक्रम

१. संवाद आधारित लोकगीत

→ दे दीजै अयोध्या के राज |

→ लड़कियाँ की बानि |

→ सुन अभिमन्यु वीर |

→ काली के भैरवनाथ बाबा |

२. ब्रज लोकगीत

→ ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई... |

→ झूला झूल रहे नन्दलाल आंगन में यशोदा ठुमक रही.. |

३. मैथिली लोकगीत

→ स्वर्ग से सुन्दर मिथिला धाम |

→ जय जय भैरवि असुर भयाउनि

४. लोकगीत पचरा

→ माई होला दर्शवा |

शिव भजन लोकगीत

→ हम तोहरे से मांगी ना |

५. सावन लोकगीत

→ बसन लागी सावन बुन्दिया |

ब्रज लोकगीत

→ ततैया ने खाइ लई हाय दैया दैया.. |

६. पहाडी़ लोकगीत

→ बेदू पाको बारा मासा |

७. कुमाऊँनी लोकगीत

→ ऊँ प्रभात को पर्व जाग |

८. भोजपुरी लोकगीत

→ देखन डगरिया |

हिन्दी लोकगीत

→ तुम पर मरता हूँ |

९. राजस्थानी लोकगीत

→ धीरे चाल ए पनिहारी लँहगो गरद भरे.... |

१०. फिल्मी लोकगीत

→ कहे तो से सजना, मैं तोहरी सजनिया |

११. अवधी लोकगीत

→ छोटी - मोटी सीता हो |

→ बन्ना - बन्नी |

→ कहवाँ के पियर माटी |

१२. अवधी लोकगीत

→ घरमा परधानी आई... |

→ सिरका |

१३ . भोजपुरी लोकगीत

→ कोयल बिन बगियाँ ना शोभे राजा |

→ सीता माँगेली अवधवा के राम |

→ चलऽ बार आवा रखी.... |

१४. मैथिली लोकगीत

→ मरुआ आँटक मोल के बूझिये

→ भष्म लगाक जटा बढ़ाक

१५. हरियाणवी लोकगीत

→ दिल्ली शहर में बिके चुनरियाँ |

कजरी लोकगीत

→ सेजिया पे लोटे काला नाग.... |

लोकगीत

→ सईया मिले लड़कैयाँ, मैं का करुं |

मैथिली लोकगीत

→ एक दिन जयबै हमसब नदी के किनारा यो |

→ धन धन नगर अयोध्या कि धन धन राजा दशरथ रे |

आंचलिकता से अभिप्राय

साहित्य की नयी विधाओं में अंचालिकता नवीन कलेवर को लेकर उपस्तिथ हुई। अंचल से आंचलिक और "ता" प्रत्यय लगाकर आंचलिकता अस्तित्व में आई। अंचल का सम्बंध भूगोल अर्थात स्थान विशेष से है।, आंचलिकता का संबंध भाव (भाववाचक संज्ञा) से जोड़ा जाता है। कई विद्वान आंचलिक को स्वतंत्र प्रवृत्ति मानते हैं। कुछ विद्वान आंचलिकता के प्रयोग को आंदोलन का रूप मानते हैं। विद्वानों ने आंचलिक को स्वतंत्र साहित्य विद्या के रूप में माना है। आंचलिकता का सजीव रूप क्षेत्र विशेष के जन-जीवन की विशेषताओं को उभारने में दिखायी पड़ती है। वेश-भूषा, जीवनयापन, आर्थिक अवस्था, वर्गगत भेदभाव, विश्वास, संस्कार, खान-पान, रहन-सहन आंचलिकता के तत्व माने जा सकते हैं।

नयी शब्दावली के संदर्भ में आंचलिक अर्थात शब्द आंचलिकता के स्वरूप को स्पष्ट कर देता है। आधुनिक संदर्भ में आंचलिकबोध' के रूप में समझा जा सकता है। ए.सी० कमरे में बैठकर आंचलिकता को जीना कठिन कार्य है। आंचलिकता के स्वरूप को आत्मसात करने के लिए क्षेत्र में जीवन बिताना आवश्यक है। लोकसभा सीटों का नामकरण स्थान के नाम से होता है। सांसद को क्षेत्र का प्रतिनिधि माना जाता है। उसी जीवन को जीने वाला सांसद अच्छा प्रतिनिधि माना जाता है।

"आंचलिकता को तुलसीदास ने श्रीरामचरित के बाल्यकांड में इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

सिय निंदक अघ ओर नसाए | लोक बिसोक बनाइ बसाए। अवधपुरी की वंदना में अवधपुरी के लोगों की महत्वपूर्ण विशेषता को उजागर किया है। अवधपुरी के लोगों ने सीता की निंदा करने वाले को शोक रहित करके अपने लोक (समाज) में मिला लिया। वह समाज धन्य होता है जो निंदा करने वालों को भी अपना बना लेता है। इसी कारण अवधपुरी महान है । लोक कार्यों का विवेचन आंचलिकता के अन्तर्गत माना जा सकता है।

डॉ० सर्वेश कुमार दुबे
हिन्दी विभाग
शिवाजी महाविद्यालय

लोकगीत (१)

→ प्रस्तुत लोकगीत कैकेयी और दशरथ संवाद पर आधारित है|

दे दीजै अयोध्या को राज.....
राजा गद्दी भरत को दे दीजै | (टेक)

काहे की तेरी गद्दी बनी है ,
काहे की लागी डोर | राजा गद्दी भरत.... |

सोनवन की मेरी गद्दी बनी है,
रुपवन की लागी डोर है | राजा गद्दी भरत ... |

→ इस लोकगीत को कई शैलियों में प्रस्तुत किया जाता है|

लोकगीत (२)

→सुदामा और कृष्ण मिलाप पर आधारित लोकगीत प्रस्तुत है|

लड़कैया की बानि... (२) टेक |
आज सुदामा घर आये |

लै थारी रुकमणि जी धावैं ,
द्वार सजावैं मंगल गावैं ,
खुशी छायी अपार | आज सुदामा... |

काहे की तेरी थारी बनी है,
काहे को साजे द्वार | आज सुदामा... |

सोनवन की तोरी थारी बनी है,
चंदन को साजे द्वार | आज सुदामा... |

लोकगीत (३)

→प्रस्तुत लोकगीत अभिमन्यु और कौरवों के संवाद पर आधारित है|

सुन अभिमन्यु वीर
पाण्डव नयन के तारे | (टेक)

भीम नकुल सहदेवा हो,
औरु धर्मराज,
अर्जुन के कहँ छोड़ै,
लड़य आय तू आज | पाण्डव नयन के... |

जीति पवऔ न आज ,
मारि जाइब तू आज | पाण्डव नयन के... |

लोकगीत (४)

→प्रस्तुत स्मरण गीत किसी प्रकार के गायन के प्रारंभ करने के समय गाया जाता है|

काली के भैरवनाथ बाबा,
तेरी शरण ढ़ोलक बाजी | (टेक)

काहे की तेरी ढोलक बनी है,
काहे की लागी डोर | बाबा तेरी शरण... |

चन्दन काठ की ढोलक बनी है,
रेशम की लागी डोर | बाबा तेरी शरण... |

→ इस छोटी सी रचना को कई शैलियों जैसे राधे- श्याम तर्ज, आरती तर्ज आदि पर गाया जाता है | लोकगीत आकार में प्रायः संक्षिप्त होते है|

संकलन
डॉ० सर्वेश कुमार दुबे
शिवाजी महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

ब्रज लोकगीत

→ प्रस्तुत लोकगीत में श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर ब्रज में नंद के द्वारे बधाई के गीत गाए जा रहे हैं। इस गीत में श्री कृष्ण के जन्म उत्सव का चित्रात्मक वर्णन किया गया है।

ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
नंद दुलारे दुलारे नौबत बाजे रे बाजे शहनाई।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
रतन जड़ित चंदन पालने पर सोहे कृष्ण कन्हाई।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
भर भर थाल मोगरा बेला मालिनीया ले आई।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
बंदनवार बना फूलन से ड्योढी दई सजाई।।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
नंदगांव गांव का सुगंध से प्रमोद इस लोग लुगाई।।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
ओपन काजल तेल महावर नाईनिया ले आई।।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
नंद लुटावे कनक धान गुड रबड़ी खीर मलाई।।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।
लूट लूट खाए सब पूजन पूरजन जय जयकारा लगाई।
ब्रज में बाजत बधाई अरी में सुनकर आई मैं सुनकर आई।।

:- यह ब्रज लोकगीत उत्तर प्रदेश में बालक के जन्म पर गाया जाता है। इसको गाने के लिए ढोलक का इस्तेमाल किया जाता है।

ब्रज लोकगीत

→ इस लोकगीत में श्री कृष्ण पालने में झूला झूल रहे हैं और उनको देख माता यशोदा खुशी से झूम रही हैं| गोपियाँ कृष्ण जी को माखन खिला रही है| कृष्ण जी की बाल क्रीडाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है|

गीत :-
झूला झूल रहे नंदलाल आंगन में यशोदा ठुमक रही।
झूला झूल रहे नंदलाल आंगन में यशोदा ठुमक रही।।
हस हस के बतावे हाल आंगन में यशोदा ठुमक रही।
निज पावन कजरा लगा दिया ,
सब अला बला को भगा दिया,
पैरों से बजावे ताल।
आंगन में यशोदा ठुमक रही।।
कोई बालों को सहलाता है,
कोई चूम के मुख को जाता है,
माखन से सने है गाल
आंगन में यशोदा ठुमक रही।।
जब खेल को दौड़े झटपट
बचपन से लाडला नटखट है
भरता है ऊंची उछाल
आंगन में यशोदा ठुमक रही।
विष्णु रूप दिखाता है,
रूप दिखाता है बनता है कालों का काल
आंगन में यशोदा ठुमक रही झूला झूल रहे नंदलाल आंगन में यशोदा ठुमक रही।।

:- यह ब्रज लोकगीत है और यह गीत ढोलक पर गाया जाता है।

संकलन
- निधी मालरा
दिल्ली विश्वविद्यालय

मैथिली परंपरागत लोकगीत

→इस गीत के मध्यम से मिथिला प्रदेश की सुंदरता का वर्णन करते हुए यहां की परंपरा के बारे में चर्चा की गई है |

स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो... |

माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो... |
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो... |
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो... |
बारिय झरिए साग भेतत अची चारे पर तिलकोर यो,
आओटा पहुँ जमी के खेता नही बीच के ता थोर यो,
स्वागत मे भेट टैन हुंका पॅयन आर माखन ,
माँदान अयाची राजा जनक कर गाम.
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो...|
कमला कोसिक निर्मल धारा झार झार गीत सूनबाई हे,
सब देवता मिल फूल बरसाबे ,
मोहन बंसी बजबे हे,
सीता बहिन हमर पाहुं राम.. .

माँदान अयाची राजा जनक कर गाम
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो..
हमारा मिता मोन लगाट अछी,
अपने प्रेमक नगरी मे ,

मिथिलक बोल अनमोल लगाट अची झुटका बैर जहाँ सबरी कर,
झुकी झुकी करैयत छी अपन माई कर प्रणाम .
माँदान आयाची राजा जनक कर गाम.
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो.. |
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो.
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो.. १
स्वर्ग से सुंदर मिथिला धाम,
माँदान अयाची राजा जनक के गाम,
जाहि थम उगना बनाल महादेव विद्यापति कर जौन यो.. . २

मैथिली परंपरागत लोकगीत

→महाकवि विद्यापति के शब्दों में प्रस्तुत लोकगीत| इस गीत में कवि ने देवी की उपासना करते हुए उनके स्वरूप और शक्ति का वर्णन किया है|

जय-जय भैरवि असुर भयाउनि
पशुपति भामिनी माया
सहज सुमति वर दियउ गोसाउनि
अनुगति गति तुअ पाया

वासर रैनि सबासन शोभित
चरण चन्द्रमणि चूड़ा
कतओक दैत्य मारि मुख मेलल
कतओ उगिलि कएल कूड़ा

सामर बरन नयन अनुरंजित
जलद जोग फुलकोका
कट-कट विकट ओठ पुट पांडरि
लिधुर फेन उठ फोंका

घन-घन-घनय घुंघरू कत बाजय
हन-हन कर तुअ काता
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक
पुत्र बिसरू जनि माता

संकलन
- रोशनी मिश्रा
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकगीत

देवी गीत पचरा- माई होला दर्शनवा

→इस गीत में माँ काली जी का वर्णन किया गया है| प्रस्तुत गीत में बहुत सुन्दर तरीके से माँ काली जी का रूप का चित्रण किया गया है| उनके शौर्य, तेज को सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया गया है|

हहरत आवे काली रूपवा हो माई होला दर्शनवा !
गरजत धावे माई शेरवा हो काली होला दर्शनवा !

लाल लंबी जिभीया कारी कारी केसीया !
मथवा पर बिंदिया बड़ी बड़ी अँखिया !
महकत आवे लाल अड़हूलवा हो काली होला दर्शनवा

गरवा मुंड माल माई हथवा में कटार हो!
खप्पर वाली काली माई पूजी चरण तोहार हो!
फहरत आवे लाल झंडवा हो काली होला दर्शनवा !

सोनवा के आसन काली उँच दरबार हो!
हाली चली आवा माई सुना मोर पुकार हो!
लहरत आवे लाल चुनरवा हो काली होला दर्शनवा

भोजपुरी शिव भजन - हम तोहरे से मांगी ना।

→ इस लोकगीत में देवा-दी- देव महादेव का भजन किया गया है| प्रस्तुत गीत में दीन- हीन दुखी भक्त अपने प्रभु बाबा दानी- शिव शंकर से आधुनिक संसाधनों के साथ- साथ पूजा के लिए केला, नारियल तथा सुपारी, धतूरा बेल का पेड बगीचा माँग रहे है तथा सुखमय जीवन बसर के लिए धन- दौलत, सोना, चांदी माँग रहे और उनसे कह रहे है कि प्रभु मेरा घर आप बनवा दीजिए कृपा कर|

केकरा से माँगी ना ये भोला जी
हम तोहरे से माँगी ना ।
हमके सोना के महल बनवा दा ये भोलाजी ।
हम तोहरे से माँगी ना ।

बनारस के साड़ी गुजरात के लहँगा।
राजस्थान के ब्लाउज बनवा दा ।
बरेली के झुमका आरा के झूलनी
कलकत्ता के कंगना बनवा दा ये भोला जी।
हम तोहरे से माँगी ना।

कार्तिक के होंडा गणेश के बुलेट मंगवा दा ।
नंदी के बोलेरो हमरा के फरारी खरीदवा दा।
भांगिया पीसे के मिक्सी कंगना में हीरा
जड़वा दा ये भोला जी |
हम तोहरे से माँगी ना।

केरा नरियर के बाग निंबुआ के बगईचा बनवा दा।
धतूरा सुपारी के पेड़ पनवा के लतर लगवा दा।
मनसा पुराई मोर धुनिया रमा जा ये भोला जी ।
हम तोहरे से मांगी ना।

भक्तन के मालामाल दुखियन खुशहाल करा।
देशवा में कमाल अंतकियन के बेहाल करा।
खेतवा में धान लहलहा दा ये भोला जी ।
हम तोहरे से माँगी ना।
हमके सोना के महल बनवा दा ये भोला जी ।
हम तोहरे से माँगी ना ।

संकलन
- राहुल
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकगीत कार्यक्रम के कुछ दृश्य

ग्रामीण महिलाओं द्वारा प्रस्तुत लोकगीत

लोकगीत

"बरसन लागी सावन बुन्दिया"

→ प्रस्तुत लोकगीत में नायिका वियोग का चित्र उकेरा गया है। इस गीत में स्त्री अपने बालम का इंतजार कर रही है,और कह रही है कि सभी प्रकार की ऋतुएँ आई और चली गई लेकिन मेरे सजन अभी तक नही आए।

बरसन लागी सावन बुन्दिया, प्यारे बिन लागे न मोरी अँखिया...
चार महीना बरखा के आये,
याद आवे तोहरी बतिया...
प्यारे बिन लागे न मोरीअँखिया... २
चार महीना जाडा़ के बीते, तरपत बीती सगरी रतिया...
प्यारे बिन न लागे मोरीअँखिया,
चार महीना गरमी के लागे, अजहुँ ना आये हमारे बलमा..
प्यारे बिन लागे न मोरी अँखिया.... २

लोकगीत

→प्रस्तुत ब्रज लोकगीत में दुल्हन रूपी नायिका को ततैया (मधुमख्खी) काट लेती है। ततैया के काटने से उत्पन्न पीडा़ का वर्णन नायिका गीत के माध्यम से करती है तथा उसकी आवाज सुन घर के अन्य सदस्य(ससुर-सास, नंद, पति) आते है, उसकी पीडा के निवारण हेतु।

ततैया ने खाइ लई हाय दैया दैया ||

हाय दैया दैया रे हाय दैया दैया,
ततैया ने खाइ लई हाय दैया दैया ||

सासू भी आई मेरे ससुरा भी आए,
देवर भी आए मेरे जेठा भी आए..
नंदुलिया भी आई हाय दैया दैया ||
ततैया ने खाई लई हाय दैया ||

ना जाने कैसे मेरे घुस गौ ततैया,
बैठी तो करवट ते पिच गौ ततैया

मैं सबरी सुजाई दई हाय दैया दैया ||
ततैया ने खाई लई हाय दैया दैया ||

जुरि आई मैरी पार परोसिपन,
दौड़े दौड के आए मेरे साजन..
गोदी में उठाइ लई हाय दैया दैया ||
ततैया ने खाई लई हाय दैया दैया ||

जब बालम ने जहर उतारौ,
परयौ में चैन में गात हमारौ..
मैं तो नैनां झुकाइ गई हाय दैया दैया ||
ततैया ने खाई लई हाय दैया दैया ||

संकलन
- रवि यादव
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

पहाड़ी लोकगीत

→इस गीत में बेर के पकने का जिक्र किया गया है | जो 12 महीने में पक कर तैयार होता है, तथा इस गीत में पहाड़ों की नंदा देवी की भी आराधना की गई है|

हो होहो हो...
बेदू पाको बारा मासा
बेदू पाको बारा मासा
ओ नारायणा कफल पाको चैता, मेरी छैला
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला

अल्मोर को लाल बाजार अल्मोड़ा
को लाल बाजार
नारायणी लाल मति की सीड़ी मेरी
छैला नारायणी लाल मति की सीधी मेरी छैला

बेदू पाको बारा मासा
बेदू पाको बारा मासा
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला

होहो होहो ..
होहो होहो ..
होहो होहो ..
होहो होहो ..

पहाड़े की नंदा देवी
पहाड़े की नंदा देवी
ओ नरेन फूल चदुनी पाटी मेरी छैला
ओ नरेन फूल चादुनी पाटी मेरी छैला

बेदू पाको बारा मासा
बेदू पाको बारा मासा
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला

होहो होहो ..
होहो होहो ..

होहो होहो ..
होहो होहो ..

आप खाने पान सुपारी
आप खाने पान सुपारी
ओ नरेन मैं केन देंदी बीड़ी मेरी छैला,
ओ नरेन मैं केन देंदी बीड़ी मेरी छैला,

बेदू पाको बारा मासा
बेदू पाको बारा मासा
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला

हो होहो हो...
हो होहो हो...

रोना झोना दिन एगा
रोना झोना दिन एगी
नारायणी में तेन तू भूलेगी मेरी चैला नारायणी में
तीन तू भुलेगी मेरी छैला

ओ चला पाको बार मासा
बेदू पाको बारा मासा
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला
ओ नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला ओ
नारायणी कफल पाको चैता, मेरी छैला पाको चैता, मेरी छैला
पाको चैता, मेरी छैला पाको चैता
कफल पाको चैता, मेरी छैला

संकलन
- अपर्णा
दिल्ली विश्वविद्यालय

कुमाऊँ लोकगीत

"ॐ प्रभात को पर्व जाग"

→यह गीत गढ़वाल और कुमाऊँ दोनो प्रान्तों में प्रसिद्ध है।इस गीत या आराधना या अर्चना में भक्त सभी देव गण, आकाश, पताल.. आदि लोकों के स्वामी को पूजा करने से पहले सभी को जगा रहे है की आप सभी जाग जाओ। मुझ पर अपनी दया दृष्टी बनाओ मुझे अपना आशीर्वाद दो... ॐ शब्द आप को पता है की ये अपने आप मे पूर्ण है और ये शब्द कितना पवित्र है..
भक्त उन सब को जगा रहे है जिनसे ये
संसार चल रहा है....

ॐ प्रभात को पर्व जाग ...
गौ स्वरूप पृथ्वी जाग...
उंदकारी काठा जाग ....
भानू पंखी गरुड़ जाग....
सप्तलोक जाग .....
इंद्रा लोक जाग .....
मेघ लोक जाग...
सूर्य लोक जाग ...
चंद्र लोक जाग ...
तारा लोक जाग...
पवन लोक जाग....
ब्रह्मा जी को वेद जाग...
गौरी को गणेश जाग ...
हरू भरु संसार जाग ...
जीव जाग , जीवन जाग ...
सेतु समुद्र जाग ....
खारी समुद्र जाग, खेराणी जाग ....
घोर समुद्र जाग , अघोर समुद्र जाग...
प्रचंड समुंद्र जाग.....
श्वेत बंधु रामेश्वर जाग .....
हूं हिवालु जाग , पाणी पयालु जाग ...
बाला बैजनाथ जाग , धोली देवप्रयाग जाग ...
हरि कु हरिद्वार जाग .....

काशी विश्वनाथ जाग …..
बूढ़ा केदारनाथ जाग ….
भोला शम्भूनाथ जाग ….
काली कुमाऊँ जाग ….
चोपड़ा , चौथाण जाग ….
खटिम कु लिंग जाग …
सोबन की गादी जाग ….

दैणा होया खोली का गणेशा हो…..
दैणा होया मोरी का नरेणा हो ….
दैणा होया खोली का गणेशा हो…
दैणा होया मोरी का नरेणा हो ….
दैणा होया भूमि का भूम्याला हो….
दैणा होया पंचनामा देवा हो…..
दैणा होया नौ खोली का नाग हो ….
दैणा होया नौखंडी नरसिंगा हो ..

संकलन

दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकगीत

→इस भोजपुरी लोकगीत में हाल में एक ब्याही लड़की अपने घर के लोगों को याद करती है रोती बिलखती है और साथ ही अपने पिता जी से अपने गांव आने का अनुरोध करती है।

देखब डगरियां
ईहा तक की दाही दुश्मन
सबके रोआ के
अपने करेजवा के पत्थर बना के
हम ससुरवा चल अइनी ऐ बाबूजी।

इहा दुर से देखिला
नाहि लऊके आपन भवनवा ऐ बाबूजी
कई लोग आवेला इहा
खाए कमाएं गऊवा के
अपने लोरवा से धो देनी
उनका पऊवा के ऐ बाबूजी।

पूछिला का कइसन बा लोग
और मुनिया, सीतवा, कजली,सपनवा
बाबूजी, माई, भैया, छोटकी बिना लागे ना मनवा
इहा सगरो शहरिया में
उदास बैठल अँगनवा ऐ बाबूजी।

इयाद आ जाला कबो कबो बाबूजी
बियाहे में लिहल सेठवा के करजवा
रतिया में छतिया के पीट देली
टूट जाला मोर सऊसे करेजवा
काहे बिटिया जनम लेली
लेवे खातिर दहेजवा ऐ बाबूजी।

माई अब के के बोलत होई भोरे भोरे
भैया केसे बाजत होइह
गइया के मोवेला गोबरा के पाथेला
महेश बो चाची से के बतिआवेला

जियरा लगा के ऐ बाबूजी।

अब के चोरा के रखत होई
तोहरा खातिर चोखा चटनी
औरी अब के कचारेला तोहार
मइल कुरतवा ऐ बाबूजी।

अब केहु आवेला का
सखियन में घरवा
अब केसे मागेल
एक लोटा पनिया ऐ बाबूजी।

बाबूजी अइहा कबो हमरो नगरियां
ले लिहा घीऊआ अचार धय लिहा गडियां
असरा में रहब हम देखब
तोहार डगरियां ऐ बाबूजी।

लोकगीत
"तुम पर मरता हूं।"

→प्रस्तुत हिन्दी लोकगीत एक प्रेमी अपने प्रेमिका से मिलने उसके गांव आता है और उसके सुन्दरता का बखान करता है।

तेरे चुड़ियाँ,तेरे पायल
मुझे बुलाया है
देख देख तेरा पिया
यहां भी आया है।

मेरी सुबह-शाम बन गए हो
रोज का एक काम बन गए हो
तुम्हें देखकर वो सरे-आम करता हूं
मरने से पहले तुम पर मरता हूं।

तुमने हसाया है बसाया है
मेरी सांसों मेरी जिन्दगी

मोहब्बत सिर्फ मोहब्बत
में गुज़रे हमारी जिंदगी
तुम्हें सपने में कभी अपने में
हरदम देखा करता हूं।

तुम्हें पाकर मैं सब-कुछ
पा चुका हूं अब
कोई दूर करना क्यों चाहे
जब ना चाहे रब
तेरे रग रग में रंग की तरह
बस चुका हूं मैं
प्रेम की रस्सी के कसके
कस चुका हूं मैं।

तेरे हाथों तेरे बातों को
को कैसे भूल सकता हूं
अब कैसे बताऊँ कि
तुमको कितना प्यार करता हूं।

संकलन
- आलोक रंजन
दिल्ली विश्वविद्यालय

राजस्थानी लोकगीत

→ प्रस्तुत गीत में सास अपनी बहु का घर पर इंतजार कर रही हैं, वह कब घर पर पानी भर कर लाएगी,पर बहु को रास्ते में अन्य महिलाए टोकती है तो बहु उन महिलाओ के सवालो का जवाब देती है।वह अपने सारे रिश्तेदारो के साथ उसके समबन्ध का वर्णन करती हैं और कहती है कि मैं जल्दी घर नही गई तो मुझे डांट पडेगी|

धीरे चाल ए पनिहारी लहँगो गरद भरे,
धीरे चाल ए सुहागन लहँगो घूमर भरे,
धीरे-धीरे चालू म्हारी सहेल्या लड़े,
उतावली चालू तो पग में मोच पड़े,
धीरे चाल ए पनिहारी लहँगो गरद भरे।

धीरे-धीरे चालू म्हारी सासु जी लड़े,
उतावली चालू तो म्हारो पाणीरो ढुले,
धीरे चाल ए पनिहारी लहँगो गरद भरे।

धीरे-धीरे चालू म्हारी जेठाणी लड़े,
उतावली चालू तो पग से गरद उड़े,
धीरे चाल ए पनिहारी लहँगो गरद भरे।

धीरे-धीरे चालू म्हारा साएब जी लड़े,
उतावली चालू तो म्हारो जोबन ढ़ले,
धीरे चाल ए पनिहारी लहँगो गरद भरे।

संकलन
- तान्या
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकगीत

कहे तो से सजना, ये तोहरी सजनिया..,
पग- पग लिये जाऊँ, तोहरी बलइया
मगन अपनी धुन मे, रहे मोरा सैया
पग- पग लिये जाऊँ, तोहरी बलइया...|

बदरिया सी बरसूँ, घटा बनके छाऊँ..,
जिया तो ये चाहे, तोहे अंग लगाऊँ.,
लाज निगोड़ी मोरी, रोके है पैया..,
पग- पग लिये जाऊँ, तोहरी बलइया...|

मैं जग की कोई रीत न जानूँ..,
माँग का तोहे सिंदूर माँगू ..,
तू ही चूडियाँ मोरी, तू ही कलइयाँ...,
पग- पग लिये जाऊँ, तोहरी बलइया...|

संकलन
- महिमा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

लोकगीत (१)

→प्रस्तुत तीनों लोकगीतों में उत्तर भारत में होने वाले विवाह/शादी के विभिन्न बिधियों का वर्णन किया गया है| विवाह के दौरान तथा विवाह के पश्चात होने वाले बिधि- विधानों का सुन्दर वर्णन किया गया है इन लोकगीतों में |

छोटी - मोटी सीता हो, अंग के पातर लिपैली धर्म छुआर|
धर्म दुअरिया सीता लिपही न, पलवी आये गये श्री भगवान|

केकर हऊ तू बारी दुलारी, केकर पूत बहार|
केकर सगे तू विअहल बाहू, लिपेलू धर्म दुआर|

राजा जनक जी के बारी - दुलारी अबहिन बाटी कुआँर |
ओवेही का हवे धर्म दुअरिया, ओनोही का लिपिला दुआर |

लोकगीत(२)

“बन्ना - बन्नी”

आवा हो बन्नी रानी मण्डप में बइठा ,
अचरा मे लइके सोहाग |
सोहाग बन्नी लाये है सजनवा,
आवा हो बन्नी रानी मण्डप में बइठा |

पापा बिलखी रोवे, मम्मी बिलखी रोवे ,
आज बेटी भईली पराई..,
सोहाग बन्नी लाये है सजनवा..|

आवा हो बन्नी रानी मण्डप में बइठा ,
अचरा मे लइके सोहाग |

लोकगीत(३)

"कहवाँ के पीयर माटी"

कहवाँ के पियर माटी
कहा के कुदार है..... २
कहवाँ के सात सौहागिन
माटी कौड़े जास है...

पटना के पियर माटी
सोने के कुदार है..
छपरा के सात सौहागिन
माटी कौड़े जास है..

माटी कौड़े या कौही
भरली दऊरीया है..
से माटी चून्हा सीजे
कौहरत के भात है...

माटी कौड़वनी अम्मा
का देबू दनवा..
तौहरा के देबो बेटी
डारी भर सौना है..

संकलन
- विपुल जायसवाल 'विजय'
- अभिषेक लाल श्रीवास्तव

लोकगीत

घरमा परधानी आई गाँव की (अवधी गीत)

→गाँव की प्रधानी आने के बाद प्रधान के घर में क्या - क्या परिवर्तन होते है, इस लोकगीत में चित्रित है |

घरमा परधानी आई
आई परधानी आई गाँव की |

खेतम नांजु भवा कबहू ना
अब छप्पर पर आलू |

अब तउ मिड -डे- मील चलती हई,
हुईगा खाता चालू |

कपड़ा - लत्ता जुरति रहे नहि
अब ओढ़े चूनरधानी
आई घरमा परधानी आई
आई परधानी आई गाँव की |

चाईउ मिठी बनई लगी है
तेलियायी तरकारी,
बनी हवेली लागि गवा नलु घरहे मा सरकारी,
अउ फैशन महिया ऐसे उडा़वइ
जस पईसा हयि पानी
आई घरमा परधानी
आई परधानी आई गाँव की
गिरगिटानु अस रंगु बदलती हई
यहु गाडिन पर गाड़ी |

कुटुर - कुटुर मुहिमा चबुलावई छल्लेदार सुपारी
खद्दर सिदरी डाटे
जिनका जुरि नाई बनियानी
आई घरमा परधानी

आई परधानी आई गाँव की |

गाँव भरे मा रोब जमावई
बिन मतलब के डांटइ
सिधुआ और गरीब - गुनी सब उनके तलवा चटाई
आई घरमा परधानी
आई परधानी आई गाँव की |

लोकगीत

"सिरका"

एक बेटी के प्रति माँ का स्नेह (अवधीगीत)

एक बेटी, माँ के आँगन से जब ससुराल विदा होती है, तब उसके बाद जब माँ के पास उसका दमाद आता है तो माँ अपनी बेटी के मनपसंद कुछ गाँव घर की चीजें बाँधती है | क्या क्या बाँधती है | इस लोकगीत के चित्रित किया गया है, हालांकि बेटी के घर किसी भी चीज़ का अभाव नहीं है, लेकिन माँ का अपनी बेटी के प्रति स्नेह कितना होता है, इस लोकगीत में दर्शाया गया है|

हमका बिटिया बिनु सूनो हर द्वार लागे
लेहे जायेऊ वहिका, सिरका पियार लागे |
भाईया थोरी दालि बँधी है, थोरी राब -मिठाई
धान और सरसों बँधी है, बँधी तनिक मलाई |
चना ऊद मसुरी है थोरी, यहु जोंधरी को आटा
यही कंटर मा भैया थोरा फेरा- फेराव माठा |
कदुआ बाँधी कैसे कुछु छोटवार लागे
लेहे जायेऊ वहिका, सिरका पियार लागे |
झोरा महिया धोती है, यहु छोटकईयाँ बदि चोटिया
और बंधी है लरिकउना की मूलन वाली लोटिया |
खुटवा वाली कली खटाई, पीसाई वाली चटनी
कहि दिन्हेउ पुटुकुरिया महिया, माटी है मूडमिशनी |
चले आयेउ जब बेरिया मा बेर लागे
लेहे जायेऊ वहिका, सिरका पियार लागे |

दिन औ राति यहे सोचित हन कब बिटिया घर आई है
इतनी दूरि अकेली घर मा कैसे रहति हुई है |
वहिके खइबे की चिंता मा जियई भरे खाई
आंसू आवे जबई अकेले गोबर पथाई जाई |
बिटिया आवे तौ यहु घर त्योहार लागे
लेहे जायेऊ वहिका सिरका पियार लगे |
कहे रहन ईश्वर से तुम बिटिया हमका ना दीनेहु,
बिटिया हमका गर दीनेहु दोसरे घर की ना कीन्हेहु |
दोसरे घर की गर कीन्हेहु तौ कष्ट ना वहिका दीन्हेहु
कष्ट अगर वहिके होवइ तब तुम हमका दयि दीन्हेहु |
वहिके दुख देखि जीबो बेकार लागे
लेहे जायेऊ वहिका सिरका पियार लागे |

"कौन माँ सुत का दुख देख रोई नही,
रात भर एक पल भी वो सोई नहीं,
रिश्ते नाते जहाँ में बहुत है मगर,
मैं तो कहता हूँ, माँ जैसा कोई नहीं".. |

संकलन
सचिन वर्मा
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकगीत (१)

कोयल बिन बगियाँ ना शोभे राजा

→प्रस्तुत गीत में नायिका अपने विरह का वर्णन करती हुई कहती है कि जिस प्रकार कोयल के बिना बाग अच्छा नही लगता है | उसी प्रकार सगे संबंधियों के बिना(देवर, ससुर, सास, ननद पति आदि) घर रूपी बाग अच्छा नही लगता है|

उजर बगुला बिन,पिपरो न शोभे,
कोयल बिन,कोयल बिन,
कोयल बिन, बगिया ना शोभे राजा,
कोयल बिन, बगिया ना शोभे राजा,
कोयल बिन, बगिया ना शोभे राजा,
कोयल बिन, बगिया ना शोभे राजा,

भाई भतीजा बिन, नहिरो न शोभे,
भाई भतीजा बिन, नहिरो न शोभे,
भाई भतीजा बिन,
भाई भतीजा बिन, नहिरो न शोभे,

देवर बिन,
देवर बिन, अंगना ना शोभे राजा,
देवर बिन, अंगना ना शोभे राजा,
देवर बिन, अंगना ना शोभे राजा,
देवर बिन, अंगना ना शोभे राजा,

देवर बिन, अंगना ना शोभे राजा।सास-ससुर बिन, ससुरो न शोभे,
सास-ससुर बिन, ससुरो न शोभे,
सास-ससुर बिन,
सास-ससुर बिन, ससुरो न शोभे,
सैंया रे बिन,

सैंया रे बिन, सेजिया ना शोभे राजा,
सैंया रे बिन, सेजिया ना शोभे राजा,
सैंया रे बिन, सेजिया ना शोभे राजा,
सैंया रे बिन, सेजिया ना शोभे राजा,

लाल सिंदुर बिन, मंगिया ना शोभे,
लाल सिंदुर बिन, मंगिया ना शोभे,
लाल सिंदुर बिन,
लाल सिंदुर बिन, मंगिया ना शोभे,
बालक बिन,
बालक बिन, गोदिया ना शोभे राजा,
बालक बिन, गोदिया ना शोभे राजा,
बालक बिन गोदिया ना शोभे राजा,
बालक बिन, गोदिया ना शोभे राजा।

लोकगीत (२)

→प्रस्तुत दोनों लोकगीत विशेषतः फाल्गुन के दिनों में अत्यधिक प्रासंगिक हो जाते हैं| जिसे समूह द्वारा गाया (गायन) किया जाता है | इस लोकगीत में पारम्परिक वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जिसमें ढो़लक, झाल, मंजीरा आदि शामिल रहते है|

सीता माँगेली अवधवा के राम सरयू नहाने को -२
राजा दशरथ अइसन ससुर माँगे
कौशल्या ए हो ऽ
कौशल्या अइसन माँगे सास
सरयू नहाने को
 सीता माँगेली----
 बाबु लक्ष्मण अइसन देवर माँगेली -२
अरे पुरुष ए हो ऽ
पुरुष माँगेली भगवान सरयू नहाने को
सीता माँगेली अवधवा के राम - - -
 हरि बोलो -- हरि बोलो ऽ
द्वारका राम सिया बलराम चंद्र की जय
बलरामचन्द्र की जय ऽ

लोकगीत (३)

चलऽ बार आवऽ सखी
मंदिरवा में दियरा ... २

कईथी के दियरा कईथी के रे बाती
कईथी के तेलवा जरेला सारी राती

जरेला सारी राती...

मंदिरवा में दियरा बार आवऽ सखि ऽ मंदिरवा में दियरा

चलऽ बार आवऽ सखी
मंदिरवा में दियरा..

सोने के दियरा रे रूपहि के बाती
सरसों के तेलवा जरेला सारी राती
जरेला सारी रातीऽ

मंदिरवा में दियरा बार आवऽ सखि
मंदिरवा में दियरा

चलऽ बार आवऽ सखी
मंदिरवा में दियरा

हरि बोलो -- हरि बोलो
द्वारका राम सिया बलराम चन्द्र की जय
बलरामचन्द्र की जय ऽ

संकलन
- अतुल कुमार
दिल्ली विश्वविद्यालय

मैथिली लोकगीत

जितिया गीत

प्रस्तुत लोकगीत में बिहार राज्य में मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध व्रत का वर्णन किया जा रहा| मणिकांत झा(लेखक) जी द्वारा इस व्रत को करने की प्रकिया तथा व्रत से जुड़े विधि-विधान का विस्तृत वर्णन किया गया है|.. मान्यता है कि माताएँ ये व्रत पुत्र प्राप्ति, संतान के दीर्घायु होने एवं उनकी सुख-समृद्धि में वृद्धि के लिए करती हैं।

मरुआ आँटाक मोल के बूझियौ
सब जितिया पबनैतिन हे
मीनक संगे होइ छै भोजन
जानथि सब घरैतिन हे।

घर घर मे बनि रहलय देखियौ
टेंगरा पोठिया माराक झोर
रोटी संगे लागि रहल छै
खयबा मे ई खूब बेजोड़
बैन बटायत अंगने अंगने
सबके सब पहुँचयथिन हे
मरुआ आँटाक मोल के बूझियौ
सब जितिया पबनैतिन हे ।

आसिन मासक पख अन्हरिया
सब क्यो राखय हरदम मन
दाइ माइ सब व्रत करथि से
जानि रहल हर एक जन मन
एक दिन पूर्वहि नहा खाइत तैं
नूनी साग जुगतयथिन हे
मरुआ आँटाक मोल के बूझियौ
सब जितिया पबनैतिन हे ।

जित जितवाहन और्दा बढ़बथि
सबहक पूतक सैह गोहारि
हमहूँ कथा पिहानी सुनबय

जहिना सूनल चील सियार
मणिकांत लिखल गीत गाबिकय
हीया खूब जूड़यथिन हे
मरुआ आँटाक मोल के बूझियौ
सब जितिया पबनैतिन हे ।

लोकगीत

''भष्म लगाक' जटा बढ़ाक '' लगाक' जटा बढ़ाक ''

प्रस्तुत लोकगीत में भोले बाबा (महादेव) के विवाह का वर्णन किया गया है | लेखक कहते है कि भष्म लगाकर, जटा बढा़ कर दानी(शिव जी) होके नन्दी पे सवार चले है विवाह रचाने और इस गीत में बारातियों का भी सुन्दर वर्णन किया गया है.... |

भष्म लगाक' जटा बढ़ाक'
बरद चढ़ल दानी सरकार
गर्दनि लटकल नागक माला
छोड़ि रहल रहि रहि फुफकार।

भूत प्रेत सब उधम मचाबय
ठोकि रहल छै अलगे ताल
खप्पड़ हड्डी हाथ मे लेने
संगहि चलि रहलनि बैताल
दृश्यो अजगुतब लागि रहल छै
बमबम के होइ छै जयकार
भष्म लगाक' जटा बढ़ाक'
बरद चढ़ल दानी सरकार।

बिजलौका चमकय चारुदिस
मेघक गर्जन करय कमाल
झमझम वर्षा बरिसि रहल छै
झाम झिंगुर सेहो उत्फाल
अन्हर उठल विर्रो संगे
पुरिबा पछबा से धुरझार
भष्म लगाक' जटा बढ़ाक'
बरद चढ़ल दानी सरकार

ब्रह्मा विष्णु इंद्र वरुण सब
अयला साजिक' बरियाती
नारद ब्राह्मण वीण बजाबथि
गिरिजा रहि रहि मुस्काती
हिमगिरि मैना हलचल लागथि
मणिकांत देखल गाम जबार
भष्म लगाक' जटा बढ़ाक'
बरद चढ़ल दानी सरकार।

संकलन
परवेज़ मुशर्रफ
दिल्ली विश्वविद्यालय

हरियाणवी लोकगीत

दिल्ली शहर में बिके चुनरियाँ

→ प्रस्तुत लोकगीत में स्त्री अपने पुरुष से कहती है कि दिल्ली शहर में अच्छे प्रकार के चुनरियाँ बिकती है, बालमा (पति) मेरे लिए वहाँ चुनरियाँ लादो| वह आगे कहती है कि जब मैं चुनरी ओढ़ के पानी लेने गई थी, तो वहाँ मुझे नज़र लग गई लोगों की| दिल्ली शहर में वैध जी का लड़का रहता| उससे मेरी नज़र उतना दो.... |

दिल्ली शहर में बिके चुनरियाँ....
औ बालमा मेरी ल्यादे चुनरियाँ....
दिल्ली शहर में बिके चुनरियाँ...२
औ बालमा औ बालमा मेरी ल्यादे चुनरियाँ.... २

औढ़ चुन्दडी़ म पानी न गयी थी....
औढ़ चुन्दडी़ म पानी न गयी थी... १
औ बालमा औ बालमा मेरे लाग्गी नज़रियाँ....
औ बालमा औ बालमा मेरे लाग्गी नज़रियाँ.... १

दिल्ली शहर में वेध जी का छोरा..
दिल्ली शहर में वेध जी का छोरा.. १
औ वेध जी औ वेध जी मेरे झाड़ दे नज़रियाँ....
औ वेध जी औ वेध जी मेरे झाड़ दे नज़रियाँ.... १

पाच लेले वेध जी पचास लेले वेध जी....
पाच लेले वेध जी पचास लेले वेध जी.... १
औ वेध जी औ वेध जी मेरे झाड़ दे नजरियाँ.... १

पाच तेरे खोटे पचास तेरे खोटे..
पाच तेरे खोटे पचास तेरे खोटे...१
र गोरी र र गोरी र तेरा लेलु जोबनियाँ..
र गोरी र र गोरी र तेरा लेलु जोबनियाँ.. १

सास लेले वेध जी ननद लेले वेध जी..
सास लेले वेध जी ननद लेले वेध जी.. १
औ वेध जी औ वेध जी मेरी झाड़ दे नजरियाँ..

औ वेध जी औ वेध जी मेरी झाड़ दे नजरियाँ..१

सास तेरी बूढ़ी ननद तेरी बालक..
सास तेरी बूढ़ी ननद तेरी बालक..
औ गोरी र औ गोरी र तेरा लेलु जोबनियाँ....
औ गोरी र औ गोरी र तेरा लेलु जोबनियाँ... १

कजरी- लोकगीत
"सेजिया पे लोटे काला नाग हो"

→ प्रस्तुत लोकगीत में नायिका(प्रेमिका) गीत के माध्यम से अपनी विरह- वेदना का वर्णन कर रही है| वह नायक(प्रेमी) को याद करती है, जब आपको रंगून(अंग्रेजो द्वारा पकड़ कर जेल ले गए) ले गए है| तब से सब कुछ सुना हो गया है| आपके जाने के बाद मेरी भी हालत खराब हो गई है| फिर वह रोद्र रस में कहती है कि अगर मेरे हाथ कटार होता तो मैं भी गोरो(अग्रेजों) का खून बहाने देती.. |

सेजिया पे लोटे काला नाग हो
सेजिया पे लोटे काला नाग हो..
कचौड़ी गली सून कइल बलमू ..
सून कइल बलमू, सून कइल बलमू.. २
मिर्जापुर कइला गुलज़ार हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू...

एही मिर्जापुर से उरे ले जहजिया,
उरे ले जहजिया हो रमा, उरे ले जहजिया.. १
सईया चल गइल रंगून हो,
कचौड़ी गली सून कइल बलमू..

सेजिया पे लोटे काला नाग हो
कचौड़ी गली सून कइल बलमू...

पनवा से पातर भइल तोर धनिया,
भइल तोर धनिया हो रामा, भइल तोर धनिया.. १
देहिया गलेला जइसे नून हो.. १
कचौड़ी गली सून कइल बलमू...

हथवा में होत जो हमरे कटरिया.. या.. १
तो बहा देती गोरबन के खून हो..
कचोड़ी गली सून कइल बलमू..
सेजिया पे लोटे काला नाग हो.
कचोड़ी गली सून कइल बलमू.. |

लोकगीत

"सईया मिले लडकैयाँ, मैं का करूँ"

→ इस लोकगीत में वर्णन करने पर बाल विवाह हुई एक लड़की की मनोदशा साधारण और मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत करते हैं। जिसमें लड़की से औरत बनने तक का सफर बयान करते हैं। नायिका आगे बताते हैं कि कैसे जब मै ब्याही गई तब से तो हम दोनो छोटे ही परंतु कैसे मैं तो अनुभवी हो गई परंतु मेरे सईया का लड़कपन (बचपना) अभी तक नही गया है।

आ...बाली उमरियां में..
एरी ब्याह के आई..
अरे मैं भोली बालमा नादान
अरे हाय कैसी...
विपत पड़ी मोरी गुईयां..

अरे कछु न समझे अजान
अरे
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ

हाय मैं का करूँ

बारह बरस की मैं, ब्याह के आयी
बारह बरस की मैं, ब्याह के आयी
बारह बरस की मैं, ब्याह के आयी

सईया बारह बरस की मैं,

ब्याह के आयी, सइयां हो....
बारह बरस की मैं, ब्याह के आयी

सईया चले पाइयाँ-पाइयाँ, मैं क्या करूँ-करूँ
सइया मिले लडकैया, मैं का करूँ

सईया चले पाइयाँ-पाइयाँ, मैं क्या करूँ
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ

हाय मैं का करूँ

हू....पंद्रह बरस की मैं, गौने पे आयी
पन्द्रह बरस की मैं, गौने पे आयी

सईया पन्द्रह बरस, की मैं गौने पे आयी
सईया हो.....

सईया उड़ावे कनकईयाँ, मैं का करूँ
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ

हाय मैं का करूँ

सोलह बरस मोरि अरि बाली उमारियाँ हो...
सोलह बरस की मोरि बारी उमारियाँ
गुइयाँ सोलह बरस, गुइयाँ सोलह बरस की

सईया सोलह बरस मोरि बाली उमारियाँ

सईया हो...
सईया छुडावे मोसे बाइया, मैं का करूँ
सईया मिले लडकैया, मैं का करूँ

हाय मैं का करूँ

बीस बरस की मैं, होने को आयी
सईया बीस बरस की मैं, होने को आयी

सईया हो....

सईया पुकारे मैया-मैया, मैं का करूँ
सईया मिले , मैं का करूँ

हाय मैं का करूँ

मैथिली लोकगीत

एक दिन जयबै हमसब नदिके किनार यो

→ प्रस्तुत लोकगीत में लेखक मनुष्य के मृत्यु के दिन की बात कह रहा है कि मनुष्य जब तेरा अंत आएगा तब तू कुछ नही कर पाएगा, जब यमराज तूझे लेने आएगें तो तूझे सारे कर्मो का हिसाब देना होगा, तेरा सारा घर- बार यही रह जाएगा| अगर तू आज से शिव का भजन कर और कर्म अच्छे कर तो तैरा बेडापार हो जाएगा|

छुइट जायतै घर द्वार यो ना । ।
एक दिन यमराज भैया औथिन
पकडिकै चारोदिश घिसिऔथिन । । २ । ।
तखन धिरे – धिरे पुछथिन हिसाब यो
छुइट जायतै घर द्वार यो ना । ।

चौका चार कहाँरिया आयता
एकटा पालकी बनयता । । २
ओइपर झाकी बिछौता ललका ओहार यो
छुइट जायतै घर द्वार यो ना । ।

छित, जल, पावक, गगन, समिर
पञ्च तत्वसे रचल शरिर । ।२ । ।
शिवके भजन करबै हे तै बेरापार यो
छुइट जायतै घर द्वार यो ना । ।

मैथिली लोकगीत

→इस लोकगीत में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र के जन्म प्रसंग का वर्णन किया गया है| आयोध्या नगरी का वर्णन है, गाँव वासीयों की मनोदशा आदि का खुबसूरत चित्रण किया गया है|

धन धन नगर अयोध्या कि धन धन राजा दशरथ रे

ललना रे धन कोशीलया जी के भाग कि राम चन्द्र जी जन्म लेल रे

आबहु पुरोहित पोथी शाहीत नेने रे

ललना रे गुनी दियौं बाबुआ के राशी कौने राशी जन्म लेल रे

नौमि नक्षत्र राम जी जन्मल कि शुभ दिन पाओल रे

ललना रे जब राम जी बारह बर्ष के होयत कि वन के सिधारथ रे

एतबा वचन राजा सुनलनी सुन्हु नै पावल रे

ललना रे ठानिलेल गोर मोर चदरिया कि हम कौना जियब रे

सोइरी घरस् बोल्थिन कोशीलया रानी आ आरो सुमित्रा रानी रे

ललना रे कतहु भय राम चन्द्र जी बथु हमरे कहैबथिन रे

संकलन
- आशुतोष सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकगीत गायक एवं गायिकाओं की एक झलक